ख़ास मुलाकात

“मसला नज़रिया बदलने का है- बदलाव खुद-ब-खुद हो जाता है”- शशिबाला सिंह

उदयपुर नगर निगम की अधिशाषी अभियंता शशिबाला सिंह जी अपनी खुशमिजाज़ी और काम को अलग और रचनात्मक ढंग से करने के लिए जानी जाती हैं। अर्बन95 परियोजना टीम से आप शुरू से जुड़ी रहीं हैं और सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। अर्बन95 द्वितीय चरण परियोजना के अंतर्गत आयोजित क्षमता वर्धन कार्यशालाओं में भाग लेने के बाद अभियंताओं के कार्य-व्यवहार में बदलाव और अपने काम में अर्बन95 के अनुभवों को शामिल करने से सम्बंधित चर्चा के लिए पिछले दिनों शशिबाला जी से मुलाकात हुई। इस दौरान शशिबाला जी के अनुभव- जैसा उन्होंने परियोजना प्रबंधन टीम से साझा किये।

“अर्बन95 से मेरा जुड़ाव काफी लम्बे समय से रहा है। परियोजना के विभिन्न कार्यक्रमों और प्रोजेक्ट्स में सक्रिय रूप से भाग भी लेती रही हूँ। पिछले दिनों अर्बन95 द्वारा क्षमतावर्धन कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की गयी; जिसमें मुझे भी भाग लेने का अवसर मिला। ये कार्यशालाएं काफी रोचक और जुड़ाव वाली थीं। इन कार्यशालाओं में फिर से उन सभी विषयों को नए अंदाज़ में अपडेटेड रूप से समझने का अवसर मिला।

मेरा मानना है कि सारा मसला केवल नज़रिए भर का है। अगर आप किसी चीज़ को अलग नज़रिए से देखने की कोशिश करेंगे तो बदलाव लाने में आपको काफी मदद मिलेगी। अलग नज़रिए से चीज़ों को देखने से किसी विषय की असल व्यापकता से भी आप रु-ब-रू होते हैं। अर्बन95 के विभिन्न सत्रों ने मेरे इसी नज़रिए को बदलने में मदद की।

इन सत्रों ने किसी भी परियोजना में बच्चों को प्राथमिकता देने के महत्व को समझाया, जिस से शहरी नियोजन में मेरी समझ (नॉलेज) और अभ्यास (प्रेक्टिस) में बदलाव हुआ। मेरे अनुभव में महत्वपूर्ण बदलाव ये आया कि निगम में अब मैं किसी भी प्रोजेक्ट की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) में बच्चों के आराम-मनोरंजन- सुरक्षा आदि को खास तौर से देखती हूँ और यह सुनिश्चित करती हूँ कि प्रस्तावित परियोजनाएं न केवल व्यावहारिक हो बल्कि छोटे बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को भी पूरा करे।

मुझे लगता है कि किसी शहर को अगर एक बच्चे के नज़रिए से देखा जाए और उसी के अनुरूप उसके विकास का खाका खींचा जाए तो शहर न केवल बच्चों के लिए बल्कि हर एक के लिए बहुत बेहतर हो सकता है। एक छोटा बच्चा अगर सड़क किनारे चलते हुए सुरक्षित महसूस कर रहा है तो इसका मतलब है- वो सड़क किसी के लिए भी सुरक्षित है। किसी सार्वजनिक बगीचे में अगर छोटे बच्चों के लिए खेलने और व्यस्त रहने के रचनात्मक खेल यंत्र लगा दिए जाए और उसके पास अभिभावकों- बड़ों के बैठने का स्थान हो तो बच्चे और उनके अभिभावक दोनों अपने में खुश और मस्त रहेंगे। अगर एक अस्पताल की रैंप एक बच्चा चढ़ सकता है तो वह रैंप हर आयु वर्ग और विशेष योग्यजन के लिए अनुकूल कही जा सकती है। ये समझ मैंने अर्बन95 की कार्यशालाओं के दौरान विकसित की।

मैं यहाँ एक अनुभव साझा करना चाहूंगी- पिछले साल (२०२३) सितम्बर में टाउन हॉल स्थित नेहरु बालोद्यान में अर्बन95 और उदयपुर निगम के साझे में उदयपुर बाल महोत्सव (किड्स फेस्टिवल) का आयोजन किया गया। इस महोत्सव से तत्काल पहले आपके (अर्बन95) अनुरोध पर नेहरु बालोद्यान में ५ साल तक के बच्चों के लिए कई रोचक झूले, फिसलपट्टी, सेंड-पिट (रेत का गड्ढा), सी-सॉ आदि लगाये गए। जब ये लगाये जा रहे थे तो मेरा संदेह था कि ये आखिर कितने दिन टिक पायेंगे? इसके पीछे वजह भी थी। आमतौर पर छोटे बच्चों के झूले आदि अपेक्षाकृत नरम मेटेरियल आदि से बने होते हैं; ताकि बच्चों को चोट न लगे। मैंने टीम को सुझाव दिया कि क्या कुछ झूले स्थायी और कुछ अस्थायी लगाये जाएँ? क्योंकि इन्हें बहुत दिनों तक तो टिकना है नहीं ! तब टीम ने मुझे आश्वस्त किया कि ऐसा कुछ नहीं होगा और ये झूले बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होंगे। आख़िरकार मैंने टीम की बात मान ली और झूले लग गए। समारोह बहुत अच्छे से आयोजित हुआ और बच्चों ने इन झूलों का बहुत आनंद भी लिया। बीच बीच में मुझे बराबर सूचना मिलती रही कि इन झूलों की वजह से आस पास के बच्चों और उनके अभिभावकों की संख्या और ठहराव इस पार्क में बढ़ता ही जा रहा है। ऐसे ही इन झूलों को लगाये ०९ महीने बीत गए।

पिछले हफ्ते मैं किसी विजिट के दौरान नेहरु बालोद्यान गयी। मेरी जिज्ञासा हुई कि छोटे बच्चों के प्ले ज़ोन (खेलने के स्थान; जहाँ झूले लगाये गए थे) में जाकर झूलों को देख लिया जाए। ताकि अगर कोई टूट- फूट हो गयी है तो उसे समय पर सुधारा जा सके। जब मैं वहां गयी तो झूलों को देखकर दंग रह गयी। झूलें बिल्कुल सही सलामत स्थिति में थे। मुझे लगा- इसका मतलब ये है कि इनका शायद

सही इस्तेमाल नहीं हो रहा- इसीलिए ये अब तक बचे हुए हैं। किन्तु वहां मौजूद छोटे बच्चों की संख्या मेरे ही तथ्य को काट रही थी। मेरे लिए ये जानना ज़रूरी था कि आखिर ये हुआ कैसे? उस शाम जब आप लोगों (अर्बन95 टीम) से मिली तो आपने बताया कि इन झूलों की साइज़ ही इतनी है कि इन्हें बड़े बच्चे या युवा उपयोग नहीं कर सकते। ये केवल छोटे बच्चों के लिए हैं। और छोटे बच्चे इसे चाहे जितना उपयोग कर ले- ये टूटेंगे नहीं !

ये बात देखने में बहुत छोटी है किन्तु ये समझ बड़ी है- जो हम इंजीनियर्स के व्यवहार में एक बड़ा बदलाव लाती है। बाल-केंद्रित दृष्टिकोण सम्बंधित यह बदलाव न केवल हमारी परियोजनाओं की समावेशिता को बढ़ाता है बल्कि सामाजिक ताने बाने में हर उम्र के लिए कुछ न कुछ ख़ास जैसे तत्व से सकारात्मकता को भी बढ़ावा देता है। अब अगर मुझे किसी भी पार्क में छोटे बच्चों के लिए झूले लगाने हैं तो मैं इस ओर ज़रूर आगे बढ़ना चाहूंगी।

अर्बन95 परियोजना और इकली साउथ एशिया ने शहर को छोटे बच्चों के लिए सुरक्षित बनाने, हरित क्षेत्र को बढ़ाने सम्बंधित जो नवाचार किये हैं; उसने अन्य विभागों को भी इस ओर सोचने का अवसर प्रदान किया है।

उदाहरण के लिए, वन विभाग ने दूध तलाई क्षेत्र और चिरवा घाटा क्षेत्र में बच्चों के लिए पार्क बनाए हैं, जिनमें छोटे बच्चों की ज़रूरतों के हिसाब से विशेष खेल क्षेत्र (प्ले ज़ोन) बनाए गए हैं। कुछ निजी संस्थाओं ने हमारे किड्स फेस्टिवल से प्रेरणा लेते हुए बच्चों के लिए निजी किड्स फेस्टिवल आयोजित किये हैं। कई स्कूल अब अपने बच्चों को हफ्ते में एक बार सिटी लेवल के पार्कों में लेकर जा रहे हैं। विभिन्न विभागों और हितधारकों के बीच यह सहयोगात्मक प्रयास हमारे शहर को "बाल-मित्र शहर" के रूप में स्थापित करने में बहुत मददगार साबित होगा। मैं दोहरा रही हूँ- अगर आप नजरिया बदलेंगे तो बदलाव खुद-ब-खुद सामने आने लगेंगे।"

अर्बन95 के बारे में

अर्बन95, वर्ष २०१६ में इकली साउथ एशिया द्वारा नगर निगम उदयपुर और वैन लीयर फाउंडेशन तथा इकोरस इंडिया के साझे में छोटे बच्चों के जीवन को आकार देने वाले परिदृश्य और अवसरों को सकारात्मक रूप से बदलने में मदद करने के लिए शुरू की गई एक पहल है। इस पहल के केंद्र में यह सवाल है कि "यदि आप शहर को ९५ सेंटीमीटर से अनुभव कर सकते हैं, तो आप क्या बदलेंगे?" शहर के नीति निर्माताओं, योजनाकारों, वास्तुकारों और सामाजिक संस्थाओं के साथ काम करते हुए, अर्बन95 इस परिप्रेक्ष्य को डिजाइन निर्णयों के केंद्र में लाने में मदद कर रहा है।